अनन्नास की अधिक उपज

आर.के. झाड़े*, टी.आर. शर्मा, सुरेंद्र पन्नासे***, पी.एल. अम्बुलकर**** और डी.सी. श्रीवास्तव*****

देश में अनन्नास की चार प्रजातियों के फलों का उत्पादन किया जाता है। इसमें से क्वीन प्रजाति का फल अत्यंत ही स्वादिष्ट और उत्पादन की दृष्टि से श्रेष्ठ होता है। इसलिए देलाखारी, तामिया की जलवायु परिस्थितियों को देखते हुए केंद्र के फार्म में लगभग 1500 वर्ग मीटर क्षेत्र में दोहरी पंक्ति पद्धति द्वारा अनन्नास की 5500 स्लिप्स को प्रयोग के तौर पर लगाया गया। अत्याधुनिक उद्यानिकी की तकनीकों द्वारा लगाए जाने और समुचित देखरेख के कारण पौधों में किसी प्रकार के कीट एवं रोग का प्रादुर्भाव नहीं देखने को मिला है। अनन्नास के पौधों में पर्याप्त फल इसके सफलतम परिणाम को दर्शाते हैं। प्राप्त फलों में इसके मूल फलों की तरह गुण देखे गए। अब इसे स्थानीय किसानों को अपने खेतों में लगाने के लिए प्रेरित किया जाएगा और पौधों का वितरण कृषि विज्ञान केंद्र, देलाखारी, तामिया द्वारा किया जा रहा है। इससे जिले के किसान लाभान्वित एवं आर्थिक रूप से सम्पन्न होंगे।

अन्नास एक मिश्रित फल होता है। पौधा झाड़ीनुमा होता है, जो लगभग 1 मीटर तक ऊँचा होता है। इसका तना प्रायः पत्तियों से भरा हुआ होता है, और पूरी तरह से गठीला होता है। भूमि के समीप स्थित गुप्त तने से सूर्य की किरणों की तरह चारों ओर पत्तियां निकलती हैं। पत्तियां कांटेदार लम्बी और कम चौड़ी, फीते के समान होती हैं। इसी स्थान से लगभग एक से डेढ़ वर्ष बाद डंठल निकलता है। इसमें फूल लगता है और यही आगे चलकर ऊपर बढ़कर फल विकसित करता है।

स्वास्थ्य लाभ

इसमें ब्रोमिलीन नामक क्रिया एंजाइम होता है, जो शरीर की पाचन में सहायक होता है। फल शर्करा बाहुल्य होता है, और विटामिन बी, सी, ए और उच्च एंटीऑक्सीडेंट का सर्वोत्तम स्रोत माना जाता है। पित्त विकारों में विशेष रूप से और पीलिया में यह काफी फायदेमंद है। इसमें प्रचुर मात्रा में मैग्नीशियम और कैल्शियम पाया जाता है, जो हड्डियों को मजबूत बनाने का काम करता है। इससे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। अनन्नास का कच्चा फल सुपाच्य, हृदय रोग तथा थकान में उपयोगी होता है। पका हुआ फल मीठा तथा रक्त विकार में लाभदायक होता है।

अनन्नास की खेती

भारत में केरल, असोम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, त्रिपुरा, बिहार तथा गोवा राज्यों में अनन्नास का उत्पादन बहुतायत से किया जाता है।

*कृषि विज्ञान केंद्र-II, देलाखारी, तामिया, जिला छिंदवाड़ा, मध्यप्रदेश; **संचालनालय विस्तार सेवाएं, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश; ***कृषि विज्ञान केंद्र, चंदनगांव, जिला छिंदवाड़ा, मध्यप्रदेश; ****कृषि विज्ञान केंद्र, डिंडोरी, मध्यप्रदेश

अनुकूल जलवायु

यह एक गर्म और आर्द्र जलवायु का फल है। इसे 100-150 सें.मी. वर्षा वाले स्थानों में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। इसके लिए इष्टतम तापमान 22-32 डिग्री सेल्सियस है। इसे समुद्र तल से एक हजार मीटर ऊपर तक उगाया जा सकता है।

भूमि का चयन

इसे बलुई दोमट मिट्टी में लगाया जा सकता है, जिसका पीएच 5 से 7 के बीच हो और जल भराव की स्थिति न हो।

पौध प्रवर्धन

अनन्नास की पौध इसके पौधों पर बनने वाली शाखाओं से तैयार की जाती है। इन्हें सकर, स्लिप और क्रॉउन के नाम से जाना जाता है।

- **स्लिपः** तने तथा फल के निचले भाग से और भूमि से निकली हुई पत्तीदार शाखाओं को स्लिप कहते हैं। अनन्नास का प्रवर्धन स्लिप द्वारा ही अधिकांशतः किया जाता है।
- **सकरः** पौधे के मूल तंत्र से निकली हुई पत्तियों वाली शाखाओं को, जो भूमि से निकलती हैं, सकर कहते हैं।
- **क्रॉउनः** फल के ऊपर लगी हुई पत्तियों के झुंड को क्रॉउन कहते हैं।
- **स्टम्पः** फल के डंठल तथा तना को स्टम्प कहते हैं।

अनन्नास की दोहरी पंक्ति रोपण पद्धति

परिपक्व फल

पौधे को खेत में लगाने से पहले बाविस्टिन या मैंकोजेब से उपचारित कर कुछ समय तक सूखने के बाद खेतों में लगाना चाहिए। स्लिप से लगाए गये पौधे रोपाई के लगभग 15 महीनों बाद फल देना शुरू करते हैं। सकर और क्रॉउन से लगाए गए पौधे रोपाई के बाद फल देने में 20 से 24 महीनों का समय लगाते हैं।

रोपण का समय

रोपण का आदर्श समय वर्षा ऋतु में जुलाई से सितंबर तक तथा बसंत ऋतु में फरवरी-मार्च है। भारी बारिश की अवधि के दौरान आमतौर पर रोपण से बचा जाता है।

पौध रोपण

अधिक वर्षा वाले स्थानों में रिज क्यारी (जमीन से 20 से 25 सें.मी. उठे हुए) बनाकर उनमें पौधे लगाने से पौधों के पास पानी जमा नहीं होता है और पौधे जड़सड़न रोग से ग्रसित नहीं होते। इसके पौधे तीन विधियों से लगाए जाते हैं:

एक पंक्ति विधि: एक पंक्ति विधि में पौधे कतारों में निश्चित दूरी पर लगाए जाते हैं। पौधे से पौधे की दूरी 40 से 45 सें.मी. एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 से 90 सें.मी. रखी जा सकती है, जिससे भविष्य में पौधों की बढ़वार के लिए समुचित स्थान एवं अन्य कर्षण क्रियाओं में सरलता हो सके।

दोहरी पंक्ति विधि: दोहरी पंक्ति विधि अपनायी जाती है। दोहरी लाइन पद्धति में दो पंक्ति के बाद 100 से 120 सें.मी. का एक ट्रेंच छोड़ा जाता है।

तीन पंक्ति विधि: इस पद्धति में समुचित पौध विन्यास की तीन पंक्तियां लगायी जाती हैं। तीन पंक्ति विधि से पौधा लगाना उचित नहीं होता है।

उच्च घनत्व रोपण पद्धति

इस पद्धति से पौधे और पंक्ति की दूरी को कम करके प्रति इकाई क्षेत्र में अधिकतम उत्पादन लिया जाता है, जो इस प्रकार है:

प्रति हैक्टर पौधों की संख्या	पौधे से पौधे की दूरी (सें.मी.)	पंक्ति से पंक्ति की दूरी (सें.मी.)	ट्रेंच से ट्रेंच की दूरी (सें.मी.)
43,500.00	30.0	60.0	90.0
53,300.00	25.0	60.0	90.0
63,700.00	22.5	60.0 या 45.0	75.0 या 90.0

निराई-गुड़ाई तथा मिट्टी चढ़ाना

अनन्नास की जड़ें भूमि की ऊपरी परत से पोषण लेती हैं। अत: उद्यान में खरपतवार का रहना अत्यन्त ही हानिकारक होता है। पौधों की वृद्धि नहीं हो पाती है। निराई के साथ पौधों में मिट्टी चढ़ाना आवश्यक होता है जिससे कि पौधे फल भार ग्रहण कर सकें। वर्ष में दो से तीन बार मिट्टी चढ़ाना आवश्यक है।

सिंचाई

ग्रीष्म ऋतु में 7-10 दिनों के और शीत ऋतु में 15-20 दिनों के अंतर से भूमि की किस्म के आधार पर सिंचाई की जानी चाहिए।

मल्चिंग एवं ड्रिप सिंचाई

दोहरी पंक्ति पद्धति में क्यारी निर्माण के बाद ड्रिप को बिछाया जाता है। इसके पश्चात 50 गेज की पॉलीथीन मल्च को क्यारी में बिछाकर समुचित पौध विन्यास के साथ उचित दूरी पर पॉलीथीन में छेद बना लिए जाते हैं, पौधे 10 सें.मी. गहरे लगाने चाहिए।

खाद एवं उर्वरक

जुताई के समय 200 से 250 क्विंटल गोबर की सड़ी हुई खाद मिट्टी में मिला देनी चाहिए। इसके अलावा पौधों को लगाते समय गड्ढों में केंचुआ खाद देने से पौधों का जमाव अच्छे से होता है। जीवामृत का उपयोग बहुत लाभकारी है, इसके उपयोग से फलों की गुणवत्ता में सुधार होता है ।

अनन्नास के फलों का बनना

कीट एवं रोग नियंत्रण

शुरूआती अवस्था में रसचूषक कीटों के नियंत्रण के लिए नीम तेल या नीमास्त्र का उपयोग किया जा सकता है। जड़सड़न और फलसड़न रोग से बचने के लिए पौध सामग्री को कार्बेण्डाजिम या मैंकोजेब दवाई से उपचारित कर ही रोपित करें। इन रोगों का प्रकोप दिखाई देने पर स्प्रे भी किया जा सकता है।

पेड़ी की फसल

अनन्नास के पौधे एक बार फलने के पश्चात् समाप्त हो जाते हैं। पौधों में फल आने के पश्चात पौधों में लगी हुई शाखाएँ निकलती हैं, जिन्हें सकर कहते हैं, इनमें से दो शाखाओं को छोड़कर शेष को काटकर दूसरे स्थान पर लगा देना चाहिए।

तुड़ाई

अनन्नास के पौधों के रोपण से लेकर फल पकने तक लगभग 18 से 20 महीने लग जाते हैं। फल पकने पर फलों का रंग लाल पीला दिखाई देने लगता है।

उपज

अनुकूल जलवायु, उचित दूरी और वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर अनन्नास की खेती में औसत उपज 30-40 टन प्रति हैक्टर हो जाती है।

भंडारण

ताजा फलों को कटाई के बाद 8-10 दिनों तक बिना नुकसान के रखा जा सकता है।

एक साथ पौधों का न फूलना

पौधों में समान रूप से फूलों को लाने के उद्देश्य से निम्नलिखित उपचार अपनाए जा सकते हैं:-

- दस मि.ली. नेप्थालीन एसिटिक एसिड 4.5 SL (NAA) दवा को 45 लीटर पानी में घोलकर पौधों पर छिड़काव करें। छिड़काव करते समय यह ध्यान रखें कि पौधे का मध्य भाग घोल से अच्छी तरह भीग जाए।
- इथ्रेल का 100 पीपीएम का घोल छिड़कने से भी समान रूप से फूल आते हैं।
- कैल्शियम कार्बाइड के चूर्ण को एक ग्राम पौधे के मध्य में डालकर थोड़ा-सा पानी डाल दें। ऐसा करने से एसिटिलीन गैस निकलती है, जिसके प्रभाव से भी पौधों में फूल आ जाते हैं। फूल लाने के लिए उपचार करने से पहले यह निश्चित कर लें कि पौधे पर कम से कम 30-40 पत्तियाँ होनी चाहिए।